आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान

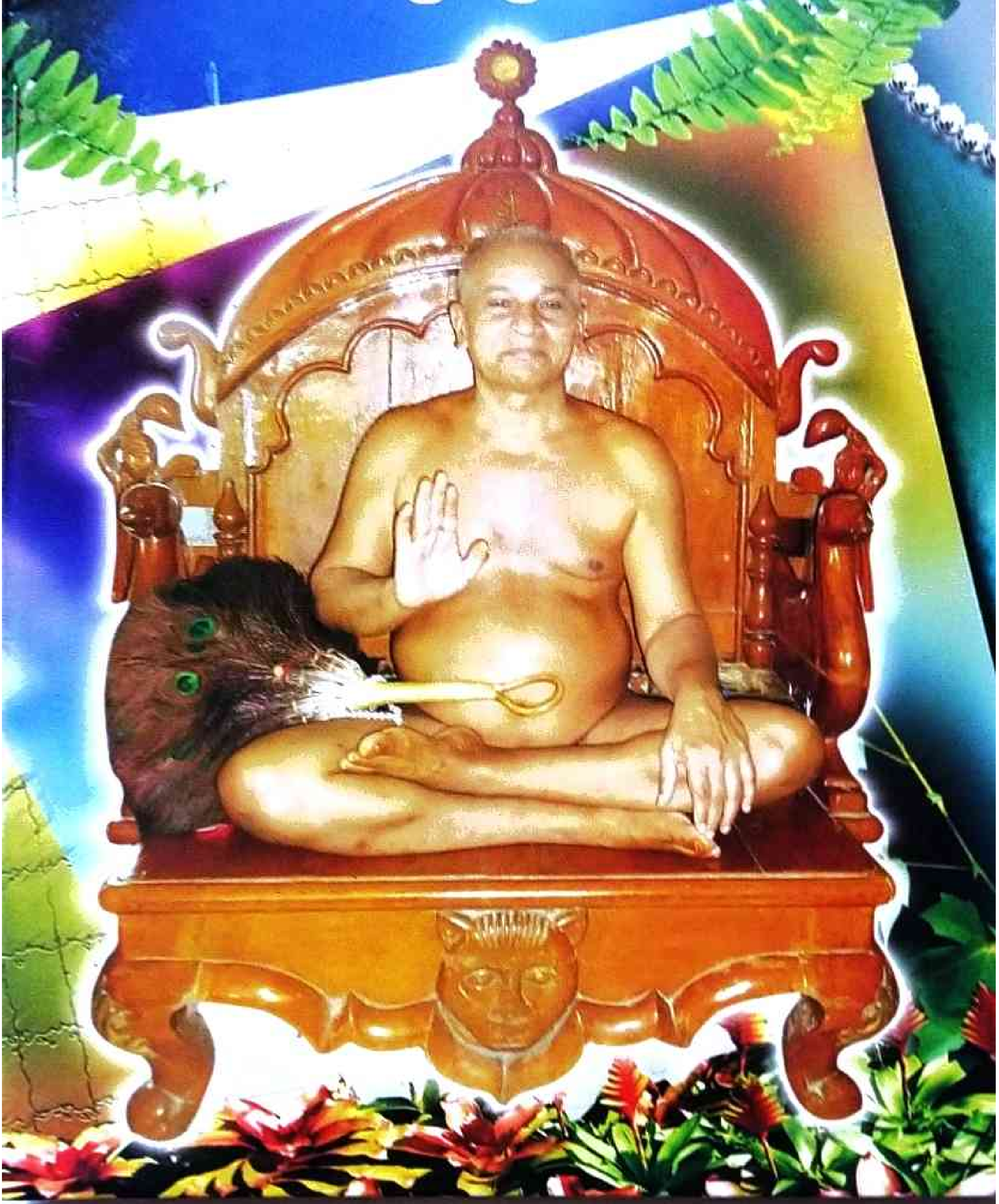

प.पू. तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट,
आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी गुरुदेव

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर,
आचार्य श्री विमलसागरजी गुरुदेव

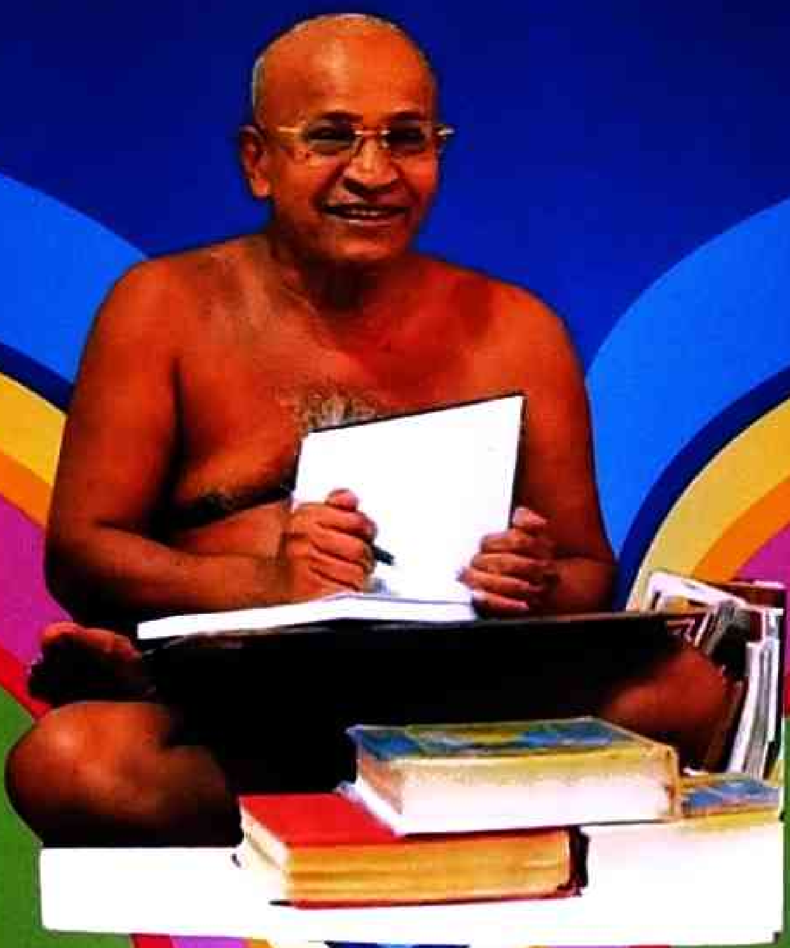

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान

आशीर्वाद एवं संपादन
आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी
दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक :
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
कचनेर (गट नं. 11-12) औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Emall : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
आशीर्वाद एवं संपादन	:	आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
सहयोग	:	मुनि श्री यशकीर्ति जी, मुनि श्री सुयशगुप्त जी मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी
रचयित्री	:	आर्यिका आस्थाश्री माताजी
सहयोग	:	क्षु. धन्यश्री माताजी, ब्र. केशर अम्मा
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	प्रथम, वर्ष-2016
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी 9922415108, 9921761008

परम पूज्य दीक्षा गुरु भारत गौरव
गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव की
हीरक जन्म जयन्ती व स्वर्णिम दीक्षा जयन्ती के उपलक्ष्य में
आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी ससंघ द्वारा सविनय समर्पित

मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर फोन : 0141-2313339, मो.नं. : 9829050791 Email : shahsundeep@rocketmail.com rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	प
1.	मेरे दीक्षा शिक्षादाता आचार्य कुन्थुसागर	आचार्य कनकनन्दी जी	
2.	भक्तों के भोले बाबा	आचार्य गुप्तिनंदी जी	
3.	हे गुरुवर ! आपके जैसा कोई नहीं	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	
4.	विधान का मांडला		1[illegible]
5.	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव पूजन	आचार्य गुप्तिनंदी जी	16
6.	प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव विधान		
7.	जयमाला		
8.	विधान प्रशस्ति		33
9.	ग.ग. कुन्थुसागर जी गुरुदेव की आरती		34
10.	चालीसा	आचार्य गुप्तिनंदी जी	36

मेरे दीक्षा शिक्षादाता आचार्य कुन्थुसागर

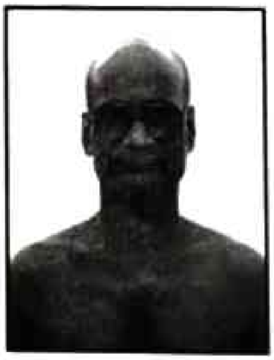

मेरे दीक्षा–शिक्षा दाता वात्सल्य रत्नाकर गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव का बड़ा ही विशाल व्यक्तित्व है। हमारे गुरुदेव बड़े ही दयालु हैं। बाल ब्रह्मचारी हैं आपने दिगम्बर वेश को धारण करके अनेक जीवों पर उपकार किया है। अनेक भव्यात्माओं को दीक्षा दी है। संघ का आप अच्छा संचालन करते हैं। आपको आचार्य महावीर कीर्ति गुरुदेव ने मुनिदीक्षा व गणधर पद प्रदान किया है। वही पद आपकी एक विशेष पहचान बना है। आप नंदी संघ के गणनायक हैं। अनेक ग्रन्थों को आपने लिखा है। आप बड़े सरल स्वभावी हैं। शान्त हैं, परोपकारी हैं। हर व्यक्ति को गले लगाने वाले हैं। जिसको कहीं भी शरण नहीं मिले उसे आप शरण देते हैं। मुझे आपने क्षुल्लक से लेकर आचार्य पद दिया है। साधु जीवन के तीन पद ही मुख्य हैं– मुनि, उपाध्याय और आचार्य। ये सब पद आपने मुझे दिये हैं। आपके चरणों में मुझे 18 वर्ष तक रहने का परम सौभाग्य मिला।

आपके आशीर्वाद से देश–विदेश में जैन धर्म का प्रचार–प्रसार हो रहा है। आपका उपकार प्राणी मात्र पर है। आपको वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी ने आचार्य पद प्रदान किया है। आपने भी बहुत से मुनियों को एवं अपने शिष्यों को आचार्य बनाया है।

आपका विधान आर्यिका आस्थाश्री ने लिखा है। मैं उसको भी शुभकामना, शुभाशीर्वाद देता हूँ। उसने गुरु का बहुमान किया है। हमारे साधर्मी बन्धु आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी ने इसका सम्पादन किया है। उनकी गुरुओं के प्रति आस्था बढ़ती रहे। प्रति नमोऽस्तु सहित यही उनके लिए आशीर्वाद है। हमारे गुरुदेव का यश चारों दिशाओं में दिग्दिगांत में अजर–अमर रहे।

मैं पुनः अपने दीक्षा–शिक्षा गुरु को त्रिकाल नमोऽस्तु करता हूँ।

–आचार्य कनकनन्दी

भक्तों के भोले बाबा

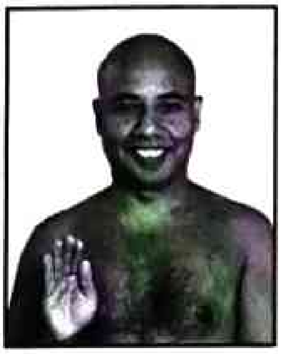

दोहा– अज्ञान तिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

जो आगम ज्ञानरूपी अञ्जन शलाका के द्वारा ज्ञानरूपी चक्षु को उन्मीलित कर देते हैं। उससे पूर्व अज्ञान तिमिर अन्धकार को जो नष्ट कर देते हैं। जो ज्ञान से भारी होते हैं उन्हें 'गुरु' कहते हैं।

इस श्लोक में निर्दिष्ट परिभाषा में बल्कि उससे भी अधिक गुणवान हैं– भारत गौरव, वात्सल्य रत्नाकर, निमित्त ज्ञान शिरोमणि, जैनागम सिद्धांत महोदधि, भक्तों के भोले बाबा, **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव** जनवरी 1991 में मुझे ब्रह्मचारी अवस्था में पूज्य **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव** के अनेक ग्रन्थ देखने को मिले। मन में जैन धर्म और उनके वैज्ञानिक रहस्यों को जानने की जिज्ञासा हुई। मैं ज्ञान पिपासा लेकर मई 1991 में गुलाब वाटिका, दिल्ली पहुँचा। वहाँ जीवन में पहली बार हँसती मुस्काती संत छवि देखी। एक ऐसा विशाल व्यक्तित्व जो दिखने में लघुकाय पर अपनी सोच, अपने आदर्श, दृढ़ सिद्धान्तों से हिमालय से भी ऊँचा लगे।

जिसमें वात्सल्य का महासागर समाया है। जो दया के सागर हैं, सिद्धान्तवेत्ता हैं, युगदृष्टा हैं, चमत्कारी वाणी के धनी हैं, मोहक जादूई व्यक्तित्व हैं। वर्तमान नंदी संघ के महानायक हैं, वे हैं हम सबके प्रेरणास्रोत परम पूज्य गणाधिपति, **गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव**। उनके प्रथम दर्शन में मन उनका दास हो गया।

अभी तक तो मैंने लौकिक विद्यालय और महाविद्यालय ही देखा था। पर यहाँ आचार्यश्री के संघ में चलता-फिरता अलौकिक महाविद्यालय, आध्यात्मिक गुरुकुल देखने को मिला। इस गुरुकुल के विद्यार्थी थे – बालाचार्य, आचार्यकल्प, प्रज्ञाश्रमण व मुनि, आर्यिका आदि। शिक्षागुरु थे सिद्धान्त चक्रवर्ती ऐलाचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव और उन सबके कुलपति थे वर्तमान नंदी संघ के संस्थापक परम पूज्य गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव।

इस अलौकिक गुरुकुल का अनुशासन भी अलौकिक है। यहाँ श्रमण शिष्यों का आत्मानुशासन हम सबके लिए आदर्श है। ऐसा विनय, प्रेम, अनुशासन दुनियाँ के किसी भी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, विद्यापीठ, गुरुकुल में देखने को नहीं मिलेगा। पूज्यश्री की अध्यापन शैली को देख मैं मंत्रमुग्ध हो गया। कुछ समय बाद सरस्वती पुत्र आचार्यश्री के प्रथम शिष्य ऐलाचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव को असाध्य बीमारी होने से उनकी सेवा वैयावृत्ति का सुअवसर प्राप्त हुआ।

संघ का प्रेम वात्सल्य विशेषकर गुरुदेव की मोहक छवि देख मन गुरु चरणों में रम गया।

मैंने लगभग 10 जुलाई 1991 को आचार्यश्री से मुनि दीक्षा की प्रार्थना की।

आचार्यश्री ने मेरे परिवार, कुल, गोत्र, जाति की, पिण्ड शुद्धि आदि की पूरी जानकारी ली, परन्तु मुझे दीक्षा का कोई आश्वासन नहीं दिया। अब मैं हर दिन आचार्यश्री को हरा श्रीफल चढ़ाते हुए दीक्षा का निवेदन करने लगा। आचार्यश्री ने पहले मुझे क्षुल्लक, फिर ऐलक बनने के लिए कहा। लेकिन मेरे पुण्योदय से मेरी दृढ़ता व साधना को देखते हुए आचार्यश्री ने मुझे 22 जुलाई 1991 को नग्न दिगम्बर जैनेश्वरी मुनि दीक्षा प्रदान

की। मेरी दीक्षा भूमि रोहतक (हरियाणा) में पूज्यश्री ने मुझे ब्रह्मचारी राजेन्द्र से 'मुनि गुप्तिनंदी' बना दिया। वह आचार्यश्री का रजत दीक्षा वर्ष था, मेरा परम सौभाग्य है कि आचार्यश्री के रजत दीक्षा वर्ष में मुझे उनसे मुनि दीक्षा लेने का सुयोग मिला। यह उनका मेरे ऊपर महान उपकार है। इस उपकार का बदला हम किसी भी कीमत पर नहीं चुका सकते हैं।

परम पूज्य दीक्षा गुरु आचार्य भगवन् ने ही अपनी विशालता दिखलाते हुए अपने शिष्यों की योग्यता देखते हुए समय-समय पर उन्हें आचार्य पद प्रदान किया। उसी श्रृंखला में आपने सन् 2000 की धनतेरस को आचार्य बनने का आदेश मुझे व संघ को दिया। आपकी प्रेरणा व आदेशानुसार 27 मई 2001 श्रुत पंचमी पर रवि पुष्यामृत योग में गोम्मटगिरी, इन्दौर में अनेक आचार्यों मुनि संघों की उपस्थिति में मेरा आचार्य पदारोहण हुआ। यह सब आपका हम पर असीम उपकार है।

आप चारों अनुयोगों के ज्ञाता व सिद्धान्तवेत्ता हैं। अनेक महाकाय ग्रन्थों के लेखक हैं। आपके सृजनशील हाथों के आशीर्वाद से ही मैं भी कुछ विधान ग्रन्थों का सृजन कर पाया। कठोर अयाचक वृत्ति का पालन करते हुए भी आपने अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार पंचकल्याणक व नव-निर्माण कराया है। अतिशय क्षेत्र अणिन्दा व श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी इसके मुख्य उदाहरण हैं। आज सम्पूर्ण भारत में सर्वाधिक आपके दीक्षित शिक्षित आचार्य शिष्य हैं जो अपने-अपने विशाल संघ सहित सम्पूर्ण देश में जिन धर्म की महती प्रभावना व प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

ऐसे भक्तों के मसीहा, पूज्य आचार्यश्री का हीरक जन्मोत्सव व स्वर्णिम दीक्षा जयंती महोत्सव आज सम्पूर्ण देश में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

उसी उपलक्ष्य में आचार्य श्री कुन्थुसागर जी व आचार्य श्री कनकनंदी जी की शिष्या **'आर्यिका आस्थाश्री माताजी'** ने गुरु भक्ति वश **'श्री आचार्य कुन्थुसागर विधान'** का नव–सृजन किया है। जगत विख्यात आचार्य गुरुदेव का यह विधान भी अतिशीघ्र जगत विख्यात होगा इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

पूज्य आचार्यश्री के जन्म व दीक्षा महोत्सव पर सिद्ध–श्रुत–आचार्य भक्ति पूर्वक नमोऽस्तु करते हुए मैं अपने संघ की भक्ति पुष्पाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

गुरु भक्त कवियित्री आर्यिका आस्थाश्री माताजी को इस महनीय कार्य के लिए विशेष आशीर्वाद। केवलज्ञान प्राप्ति से पूर्व तक आपकी लेखनी अनवरत चलती रहे यही हमारी शुभकामना है।

ग्रन्थ के प्रकाशन में अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करने वाले, युवादान शूर संघपति श्री सचिन संतोष ताराचन्द पाटनी परिवार को विशेष आशीर्वाद, ग्रन्थ के पाठक–पूजक, इन्द्र–इन्द्राणी, मुद्रक, प्रकाशक, सहयोगी सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनंदी

धर्म सूर्य श्री पद्मप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर

बीड (महा.)

हे गुरुवर ! आपके जैसा कोई नहीं

दोहा– श्री कुन्थुसागर गुरु, नमन तुम्हें त्रयकाल।
त्रय भक्ति के साथ में, झुका रहे हम भाल।।
गुरुवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान दर्शन नायकाः।
चरित्रार्णव–गम्भीरा, मोक्ष–मार्गोपदेशका।।

आचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव का वात्सल्य (प्रेम करुणा) देखते ही बनता है। उनके विषय पर प्रकाश डालना तो सूरज को दीपक दिखाने के समान है। गुरुदेव बड़े ही सरल स्वभावी हैं। जहाँ–जहाँ भी गुरुदेव गये हैं। वहाँ का बच्चा–बच्चा आपके स्वभाव से परिचित है। जिसने एक बार भी आपका दर्शन किया वह बार–बार आपके पास आने की इच्छा करता है। आपके चेहरे पर त्याग, तपस्या की अलग ही चमक दिखाई देती है। आपकी चुम्बकीय शक्ति हर भक्त को आपकी ओर खींचकर लाती है। जब भी कोई भक्त परेशान होता है। तब वह आपके पास अपनी समस्या लेकर आता है।

आपसे समाधान पाकर प्रसन्न होकर जाता है। आपके पास से कभी भी कोई भक्त आज तक निराश होकर नहीं लौटा। जिस भक्त ने जिस कार्य का भी आशीर्वाद आपसे मांगा उसको आपने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया है और हरदम आप देते रहते हैं।

आप हर भक्त की पीड़ा को सुनते हैं, कितनी ही भीड़ आपके पास में बैठी हो पर आप हर एक आने वाले भक्त से बात करते हैं। उसके दुःख–दर्द को दूर करने का मार्ग बताते हैं। अपने हाथ से यंत्र बनाकर उसे देते हैं। आपकी वाणी में तो वो जादू है जो विरले व्यक्तियों में ही देखने को मिलता है।

आपकी वाणी रसगुल्ले से भी अधिक मीठी है। आप हर एक बच्चे–बूड्ढे, जवान, बालक, बालिका, महिला आदि सबको 'बेटा' कहकर बोलते हैं। इस बेटा शब्द में वो जादू हैं जो किसी शब्द में नहीं है।

आप एक ऐसे महान आचार्य हैं, जिनने अपने संघ की अलग ही पहचान बनाई है। जो संघ मूल संघ के नाम से जाना जाता है। जो नाम केवल जिनवाणी (आगम) में पढ़ने को मिलते थे। उन्हीं नाम को आपने फिर से उजागर किया है। आपने अपने शिष्यों के नाम के पीछे 'नंदी' शब्द लगाया और आर्यिकाओं के नाम के पीछे 'श्री' शब्द लगाया है। पंचम काल की अंतिम आर्यिका के नाम के पीछे भी 'श्री' शब्द लगा है। आपने अनेक आचार्यों, मुनियों, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं को दीक्षा दी है। आपके शिष्यों में भी हर शिष्य ने अपने शिष्यों के नाम के पीछे कुछ अलग-अलग शब्द लगाये हैं। किसी शिष्य ने 'नंद' शब्द, किसी ने 'कीर्ति', किसी ने 'ऋषि', किसी ने 'गुप्त' आदि नाम रखे हैं।

आपके वात्सल्य और मधुर वाणी से प्रभावित होकर अनेक आर्षमार्ग को नहीं जानने वाले शिष्य आपके पास में आये। उन्होंने जिनवाणी को समझा आर्षमार्ग क्या है वह जाना।

आज वे सभी शिष्य आचार्य बनकर आर्षमार्ग का डंका बजा रहे हैं। आपके शिष्य ऐसे पक्के हैं कि वे कभी आर्षमार्ग से विपरीत नहीं जायेंगे। चाहे प्राण चले जाये यह आपके शिष्यों की विशेषता है। आपने एक नहीं, दो नहीं, कई मुनियों को अपने-अपने संघ का आचार्य बनाया है। उसमें भी सबसे बड़ा कार्य यह किया है जिसकी मुनि दीक्षा जब हुई है और वह आचार्य चाहे छोटे मुनियों के आचार्य बनने के बाद भी आचार्य बनेगा तो भी वह दीक्षा के क्रमानुसार बड़ा आचार्य रहेगा। नमोऽस्तु, प्रतिनमोऽस्तु भी उसी तरह से करेगा।

आपने हर क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। कई तीर्थों का जीर्णोद्धार कराया, कुछ नये तीर्थ बनाये हैं, अनेकों पंचकल्याणक कराये हैं।

आपने 'कुन्थुगिरी तीर्थ', ऐसे स्थान पर बनाया है। जहाँ हर व्यक्ति शांति और आनंद का अनुभव करता है। हरियाली से परिपूर्ण यह क्षेत्र दक्षिण का 'सम्मेद शिखर' है। सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी में तो भगवान के चरणों का दर्शन होता है पर यहाँ के सम्मेद शिखर में खड्गासन पद्मासन बढ़ी-बढ़ी प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं।

यहाँ पर साधु भी आकर शांति से साधना कर रहे हैं। कितने ही मुनिराजों ने आपके चरणों में रहकर समाधि कर ली है। कई आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं की यहाँ आपके सान्निध्य में समाधि हो गई है।

कुन्थुगिरी क्षेत्र में अनेक मंदिर बने हैं। गुरु मंदिर, आगम मंदिर, कैलाश पर्वत, सहस्रकूट चैत्यालय, सम्मेद शिखर जी, कलिकुंड पार्श्वनाथ जिनालय जहाँ धूमधाम से हर रोज पंचामृत अभिषेक होता है। जिसका नजारा देखते ही बनता है।

गुरुदेव का वात्सल्य श्रावकों से ही नहीं है बल्कि साधुओं से भी उतना ही प्रेम, वात्सल्य उनके अंदर है। उनकी मुद्रा में आचार्य विमलसागर जी, आचार्य महावीर कीर्ति जी के दर्शन हो जाते हैं।

जब कुन्थुगिरी में 2005 में पंचकल्याणक हुआ। उस समय अनेक आचार्यों को आपने पंचकल्याणक में बुलाया, गुरुदेव से दीक्षित शिष्य गण तो आचार्यश्री का आदेश सुनते ही आ गये साथ ही परगण के अनेक आचार्य भी ससंघ वहाँ पर आये। उस समय 14 आचार्यों का संघ आया था। सवा दो सौ पिच्छी वहाँ मौजूद थी। दूसरी बार 2013 के पंचकल्याणक में 200 पिच्छी के करीब साधु–साध्वी पहुँचे थे।

आचार्यश्री छोटे–बड़े अमीर–गरीब किसी भी व्यक्ति में कोई भी भेदभाव नहीं करते हैं। कोई भी व्यक्ति आपसे निडर होकर आराम से बात करता है। आप बड़ों के साथ बड़े जैसी बात करते हैं तो छोटों के साथ छोटे बच्चे बन जाते हैं। आपके चरणों में दूर–दूर से थके हुए लोग आते हैं। आपके दर्शन करते ही वे सारी थकान भूल जाते हैं। आप भोले बाबा वात्सल्य के भंडार हैं। हरपल हंसते, मुस्कुराते रहते हैं।

आपके प्रमुख शिष्य जो अभी वर्तमान में आचार्य बनकर धर्म की महती प्रभावना कर रहे हैं। आपने अपने प्रथम शिष्य को ही अपने संघ का शिक्षा गुरु बनाया है। वो वैज्ञानिक हैं, समता की मूरत हैं। ऐसे ज्ञानी, विज्ञानी सर्वश्रेष्ठ आचार्य हैं आचार्यरत्न श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव। उन्होंने अपनी प्रथम शिष्या (आर्यिका आस्थाश्री) की दीक्षा आपके कर–कमलों से करवाई है।

मैं सबसे पहले आपके दर्शन करने उदयपुर में आई थी। मैंने पहली बार आपको देखा, जैसे ही मैंने आपके दर्शन किये नमोऽस्तु किया तो आपने पूछा बेटा, तू 'लीला' है ना।

मैंने कहा– हाँ गुरुदेव ! फिर मेरे को बड़ा आश्चर्य हुआ। गुरुदेव को मेरा नाम कैसे पता चला, मैंने तो आज पहली बार गुरुदेव को देखा है। यह आपका विशेष ज्ञान है। वे बिना देखे भी भक्तों को पहचान लेते हैं। आपका यह वात्सल्य है। आचार्य भगवन् ! आज भी मेरे मन में यह बात याद आती रहती है। गुरुदेव ने मुझे कैसे पहचाना था ?

मैं आपके शिष्य की शिष्या हूँ। मेरा परम सौभाग्य है जो आप जैसे वात्सल्यमयी गुरु से मुझे दीक्षा लेने का अवसर मिला। उसी उपकार को ध्यान में रखते हुए मेरे ये विधान लिखने के भाव जागृत हुए। मैं वैसे आपके पास में अधिक समय नहीं रही, लेकिन आपके विषय में अपने दोनों गुरुओं (आचार्य श्री कनकनंदी जी व आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी) से जितना सुना था और 'स्याद्वाद केसरी' में जो पढ़ा उसी के आधार पर ये विधान लिखा है।

अभी तक के जीवन में मैंने केवल पाँच बार आपके दर्शन किये हैं। पर हमेशा मन में इच्छा होती है, जिन गुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी उनके पास रहने का कभी अवसर मिले। जहाँ–जहाँ भी गये हैं वहाँ के भक्त आपके प्रेम, वात्सल्य के विषय में जब बताते हैं तो मुझे सुनकर बहुत ही आनंद का अनुभव होता है।

आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव भी हमेशा कहते रहते थे– हमारे गुरुदेव महात्मा गाँधी जैसे हैं और मैं सुभाषचंद बोस की तरह हूँ। आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव हमेशा आपको 'भोले भंडारी' कहते हैं। कहते हैं– हमारे गुरुदेव भक्तों के भोले बाबा हैं। कैसा भी व्यक्ति आये, गुरुदेव कभी उस पर नाराज नहीं होते। यही कहते हैं। हाँ बेटा, हाँ बेटा, तू चिंता मत कर सब ठीक हो जायेगा। धन्य भाग्य हमारे जो हमें आपके जैसे सरल स्वभावी गुरु मिले।

गुरुदेव ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार, लघुविद्यानुवाद, व्रत कथा कोष, कई विधान, गोम्मट प्रश्नोत्तर चिंतामणि आदि अनेक ग्रंथ भी लिखे हैं।

आपके द्वारा एक क्षेत्र का विकास बहुत अच्छा हुआ है। वह स्थान है अणिन्दा पार्श्वनाथ। यह क्षेत्र आपके जन्म स्थान के बिल्कुल पास में है।

यह प्राचीन अतिशय क्षेत्र है यहाँ पर आपने सुमेरु पर्वत, अष्टापद पर 72 जिनालय, पारसनाथ भगवान की खड़गासन प्रतिमा स्थापित करायी हैं और सबसे अधिक सुन्दर है महादेवी पद्मावती का मंदिर, ऐसी प्रतिमा शायद भारत में और कहीं पर भी नहीं होगी, जैसी यहाँ पर है। पद्मावती माता के मस्तक पर इतने बड़े पार्श्वनाथ आपने बिठाये हैं। वैसे कहीं भी दर्शन करने को नहीं मिलते। यहाँ पर हर नवरात्रि में पद्मावती माता का विधान होता है। आपने देवी-देवताओं का सम्मान करना सिखाया है। यहाँ पर हर दिन देवी माता का भव्य श्रृंगार होता है। फूलों की मालाओं से पूरा मंदिर सजाया जाता है, वह दीपों से जगमगाता रहता है।

जब यहाँ पर पंचकल्याणक हुआ था तब भी आपने अपने सभी शिष्यों को बुलवाया था, जो आस-पास में थे वो सब वहाँ पहुँचे थे। करीब 75 पिच्छी उस समय वहाँ पर मौजूद थी। मुझे भी पूरा पंचकल्याणक देखने का अवसर मिला।

आपके शिष्य श्रृंखला में प्रमुख आचार्यों के नाम-

1. वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

2. आचार्य श्री पद्मनंदी जी, 3. आचार्य श्री देवनंदी जी

4. आचार्य कुमुदनंदी जी, 5. आचार्य श्री कुशाग्रनन्दी जी गुरुदेव

6. आचार्य श्री विद्यानंदी जी, 7. आचार्य श्री कामकुमारनंदी जी

8. आचार्य श्री गुणधरनंदी जी, 9. आचार्य श्री गुणनंदी जी

10. आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी।

और भी कई आचार्य हैं एवं कुछ की समाधि हो चुकी है, अनेक आर्यिकाओं को आपने गणिनी पद प्रदान किया है।

गृहस्थ जीवन में आपके एक भाई और दो बहने हैं। भाई तो स्वयं प्रतिष्ठाचार्य, पंडित मांगीलाल जी लोलावत हैं जो कि बड़े ही सरल स्वभावी

और व्रती हैं वो व्रत, उपवास बहुत करते हैं। एक बहन तो आपके पास में ही साधनारत है। दूसरी बहन घर में रहकर आने वाले साधु–संतों की हमेशा सेवा, वैय्यावृत्ति करती रहती थी।

आपने पूरे भारत में विहार किया है। हर क्षेत्र में आर्षमार्ग का डंका बजाया है। आप कुन्थुगिरी में समय–समय पर कुछ–न–कुछ कार्यक्रम करवाते रहते हैं। धर्म की प्रभावना ही आपका मुख्य उद्देश्य है। आपके गुणों को लिखना तो सागर को अंजुली में भरने के समान है।

इस विधान में कुछ मंत्र सिद्धचक्र विधान से लिखे हैं। गुणों के भंडारी मधुर भाषी अनेक पदवियों से अलंकृत ऐसे गुरुदेव के गुणों का मैं भी वर्णन करने में असमर्थ हूँ। उन से यही आशीर्वाद चाहती हूँ। आपके जैसी सरलता मेरे अंदर भी आये गुरु के चरण–कमल हमेशा मेरे हृदय में रहे। मेरे स्त्रीलिंग का छेद हो समाधि पूर्वक गुरु चरणों में मरण हो, इसी भावना से आपके श्रीचरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

हमारे मार्गदर्शक दीक्षा शिक्षा प्रदाता वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक आस्था के साथ नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

'श्री कुन्थुसागर विधान' का संपादन करने वाले आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

यह विधान मैंने एक माह के अंदर गुरुवर के आशीर्वाद से पूरा किया है। अंजनगिरी के शांतिनाथ भगवान के पास लिखना प्रारम्भ किया था और औरंगाबाद राजा बाजार के शांतिनाथ भगवान के पास पूर्ण किया है।

इस विधान को छपवाने वाले गुरुभक्त, दानवीर श्रेष्ठी श्रीमान् ताराचंद जी, संतोष कुमार जी, सचिन कुमार जी पाटनी परिवार को एवं मुद्रक, प्रकाशक, पाठकों को शुभाशीर्वाद।

–आर्यिका आस्थाश्री

विधान का मांडला

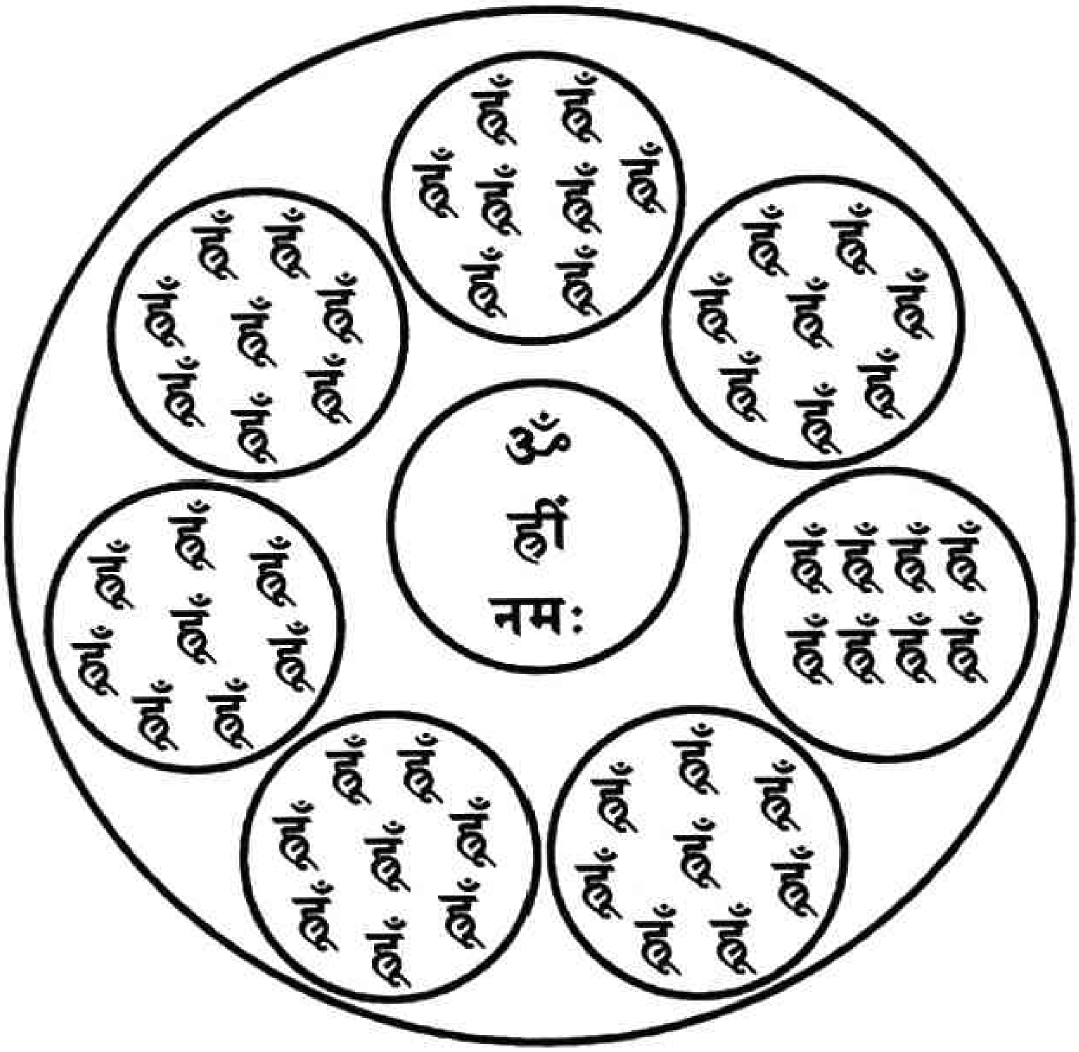

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव पूजन

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

स्थापना (गीता छन्द)

श्री कुन्थुसागर ! मम गुरो आचार्य नंदी संघ के।
मुस्कान तुम मुख पे सदा, तुम हो धनी वात्सल्य के।।
गुरु की छवि मन में बसा, उर में उन्हें बैठा रहा।
पुष्पांजलि ले हाथ में, पूजा गुरु की गा रहा।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं प.पू.ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं प.पू.ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छन्द)

नवरत्न मणि युक्त स्वर्ण कुम्भ सजायें।
श्री कुन्थुसिंधु के पवित्र पाद धुलायें।।
जिन धर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वन्दे कुन्थुसागरम।।1।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर चंदनादि द्रव्य मिलायें।
लेकर पवित्र गंध आप पाद लगायें।। जिन धर्म...।।2।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती व अक्षतों के दिव्य पुंज चढ़ायें।
अक्षय अखंड दिव्य आत्म सौख्य जगायें।। जिन धर्म...।।3।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुगिरी की वाटिका से पुष्प चुनायें।
कोमल हृदय गुरु के पाद पुष्प चढ़ायें।। जिन धर्म...।।4।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार नेवजों की थाल सजा के।
तुम को चढ़ाई हमने आज नाच बजा के।।
जिन धर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वन्दे कुन्थुसागरम।।5।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतों में दीप आप तुम्हें दीप चढ़ायें।
दे ज्ञान दीप आप मोक्ष मार्ग दिखायें।। जिन धर्म... ।।6।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे संत भूप ! धूप चढ़ायें जो मन हरे।
ये धूप अर्चना हमारे कर्म को हरे।। जिन धर्म... ।।7।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा फलों का आम सूरि राज को चढ़े।
हम मोक्ष फल को पाने आज द्वार पे खड़े।। जिन धर्म... ।।8।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य कुन्थुसिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।। जिन धर्म... ।।9।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : कुन्थुसिंधु गुरुदेव का, शांति पूर्ण व्यवहार।
शांति धार करके मिले, हमें वही व्यवहार।।

शांतये शांतिधारा.....

हँसती मुस्काती छवि, जिनकी पुष्प समान।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, जय भावि भगवान।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ हूँ कुन्थुसागर सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- दुःखहरणी सुख कारिणी, जिनकी कला विशाल।
कुन्थुसिंधु गुरुराज की, गायें हम जयमाल।।

(नरेन्द्र छन्द)

जय-जय गुरु वात्सल्य दिवाकर, जय-जय कुन्थुसागर की।
विमल गुरु सम भोले बाबा, जय करुणा के सागर की।।
रेवा जिनदेवा के सेवक, सोहन देवी मैय्या है।
बाठेड़ा में जिनके घर में, जन्में बाल कन्हैया है।।1।।

पिता तुम्हारे आगम ज्ञाता, ज्योतिर्विद जो कहलाये।
विद्यालय में गये बिना ही, उनसे सब विद्या पाये।।
द्रव्यार्जन का लक्ष्य बनाकर, नगर अहमदाबाद चले।
रोजगार से बढ़कर तुमको, सीमंधर अनगार मिले।।2।।

बाल ब्रह्मचारी गुरुवर से, ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।
गुरु के संग बेलगोला में, गोम्मटेश का न्हवन किया।।
वहाँ आदिसागर के नंदन, महावीर कीर्ति आये।
उनकी विद्या त्याग तपस्या, व्रती कन्हैया को भाये।।3।।

हुम्बुज पद्मा माँ के द्वारे, गुरु से मुनिव्रत घोर लिया।
वय किशोर का शोर मिटाकर, जग सुख को झकझोर दिया।।
महावीर कीर्ति गुरुवर ने, गणधर पद का दान दिया।
अनुज प्रेम रख विमल गुरु ने, पद आचार्य प्रदान किया।।4।।

गणधर वा आचार्य शब्द, इन दो शब्दों की संधी से।
आप गणधराचार्य कहाये, महके ज्ञान सुगंधी से।।

ग्रन्थ रचे बहु चलते-फिरते, तीर्थ बनाये गुरुवर ने।
कनक पद्म से रत्न अनेकों, गुरुवर तुम रत्नाकर में॥5॥

देव कल्पश्रुत श्री कुशाग्र वा, गुण-विद्या गुणधरनंदी।
गुरुवर के हैं शिष्य अनेकों, उसमें मैं गुप्तिनंदी॥
कुलभूषण माँ कमल राजश्री, आदि गणिनी आर्यायें।
कई आर्यिका और क्षुल्लिका, कहलाती तुम शिष्यायें॥6॥

नंदी संघ विशाल तिहारा, उसके नायक गुरुवर तुम।
जिस पर हो आशीष तुम्हारा, उसे कभी ना होवे गम॥
स्याद्वाद केसरि गुरुवर ने, धर्म ध्वजा फहराई है।
कर एकांत तिमिर का भंजन, आगम रीति बताई है॥7॥

रानीला आदिश्वर प्रगटा, तीर्थ अणिंदा चमकाया।
पद्माम्बा से प्रेरित होकर, कुन्थुगिरी को विकसाया॥
गुरुवर तुम आदर्श हमारे, सबके संकट हरते हो।
बिन माँगे ही सब भक्तों की, झोली निशदिन भरते हो॥8॥

आर्ष मार्ग के संरक्षक तुम, हे भारत गौरव ! ज्ञानी।
जग में सब सुख कोष लुटाये, तुमसा ना कोई दानी॥
हे गुरुवर ! हम तुम गुण गायें, हम बच्चों की लाज रखो।
'गुप्तिनंदी' के सिर पर बाबा, अपने दोनों हाथ रखो॥9॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीतिका छंद)

जो हैं गणाधिपति गुरु, वात्सल्य रत्नाकर अहा।
उन पर सदा आस्था धरें, करते सुखद अर्चन महा॥
रवि चंद्र सम उनका सुयश, बढ़ता रहे त्रय लोक में।
गुरु भक्ति से सब सौख्य पा, पहुँचे परम शिवलोक में॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव विधान

(गीता छंद)

आचार्य कुन्थु सिंधु को, है आज शत-शत वंदना।
वात्सल्यमयी गुरुदेव की, हम कर रहे हैं अर्चना।।
गुरुदेव की छवि मोहनी, हर भक्त को मोहित करे।
कुन्थुगिरी के पुष्प ले, आहवान उनका हम करें।।

ॐ ह्रीं श्री प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

बड़े-बड़े कलशों में हम सब, नीर क्षीर भर लाये।
गुरु पद का प्रक्षालन करके, अपने रोग मिटायें।।
श्रमण शिरोमणि भारत गौरव, कुन्थु गुरु हमारे।
हम सब करें विधान आपका, मेटो कष्ट हमारे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर की केशर चंदन, सुरभित घिस हम लाये।
गुरु के चरण धुलाकर अपना, भव आताप नशायें।। श्रमण...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री .... संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत माणिक हीरा-पन्ना, गज मुक्तादि सजायें।
गुरुवर पर हम रत्न वृष्टि कर, अक्षय पुण्य कमायें।। श्रमण...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सब देशों के रंग-बिरंगे, पुष्पों की ले माला।
गुरु के चरण चढ़ायें हम सब, पायें गुरु गुणमाला॥
श्रमण शिरोमणि भारत गौरव, कुन्थु गुरु हमारे।
हम सब करें विधान आपका, मेटो कष्ट हमारे॥4॥

ॐ ह्रीं श्री प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुजियाँ बरफी लड्डू पेड़ा, सेव कचौरी लाये।
घेवर रबड़ी षट्रस व्यंजन, गुरु को शुद्ध चढ़ायें॥ श्रमण... ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री .... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपमालिका सजा थाल में, मंगल आरती गायें।
गुरुवर तेरी आरती करके, ज्ञान भारती पायें॥ श्रमण... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री .... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु सन्मुख हम अग्नि पात्र में, सुरभित धूप खिरायें।
अष्ट करम हो नष्ट हमारे, यही भावना भायें॥ श्रमण... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री .... अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल के गुच्छे लेकर गुरु की, पूजा-भक्ति रचायें।
गुरुवर के पथ पर चलकर हम, महामोक्ष फल पायें॥ श्रमण... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पादिक, वसु विध द्रव्य सजायें।
अर्घ चढ़ा हम भक्ति रचाकर, गुरु गुण गाथा गायें॥ श्रमण... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री .... अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- रेवाचंद के लाडले, सोहन माँ के लाल।
कुन्थु सिंधु गुरु आपको, पूजें हम त्रयकाल॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

गुरुदेव जन्म आपका, बाठेड़ा ग्राम में।
धरती पे आप अवतरे, मध्याह्न काल में।।
गुरुदेव के वात्सल्य का, नहीं है कोई पार।
करने गुरु की अर्चना, हम आये गुरु द्वार।। 1 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माता-पिता ने नाम रखा, आपका त्रिलोक।
माता कहे कन्हैया तुम्हें, ना कहे त्रिलोक।। गुरुदेव... ।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि संज्ञा रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नटखट छवि लख आपकी, माँ हो गई निहाल।
रेवा पिता कहें महान, होगा मेरा लाल।। गुरुदेव... ।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि दर्शन रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन को खेलकूद वा, शिक्षा में बिताया।
स्कूल गये बिना ज्ञान, पिता से पाया।। गुरुदेव... ।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि ज्ञान रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठ दस वरष की आयु में, घर से निकल चले।
नगरी अहमदाबाद में, गुरु आपको मिले।। गुरुदेव... ।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि चारित्र रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव सीमंधर से, ब्रह्मचर्य व्रत लिया।
उस एक व्रत से आपने, जीवन बदल दिया।। गुरुदेव... ।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि ब्रह्म रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले ली गुरु से आपने अब पाँचवीं प्रतिमा।
प्रतिमा से जागी आपकी, श्रुत ज्ञान प्रतिभा।। गुरुदेव... ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि व्रत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा की भावना जगी, फिर आपके मन में।
महावीर कीर्ति गुरु मिले, आपको वन में॥
गुरुदेव के वात्सल्य का, नहीं है कोई पार।
करने गुरु की अर्चना, हम आये गुरु द्वार॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि धर्म रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थ क्षेत्र की करें वंदना, गुरु के संग कन्हैया।
पार्श्वनाथ को मस्तक पे रख, आगे चले कन्हैया॥
भारत गौरव कुन्थुसागर, हो वात्सल्य दिवाकर।
भक्ति नृत्य जयकार सहित, हम लाये अर्घ सजाकर॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि तीर्थवन्दना रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुमचा पद्मावती क्षेत्र पर, दर्शन हेतु आये।
चातुर्मास यहीं पर होगा, गुरुवर ये बतलायें॥ भारत...॥10॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि मंगल रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होम्बुज पद्मावती माता को, मन के भाव बताये।
तब देवी माता के कर से, पुष्प हाथ में आये॥ भारत...॥11॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि उत्तम रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि पुष्य के शुभ मुहूर्त में, मुनि दीक्षा गुरु पायें।
बने कन्हैया कुन्थुसागर, भक्त सभी हर्षाये॥ भारत...॥12॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि शरण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस वर्ष की यौवन वय में, तुमने दीक्षा धारी।
बाल ब्रह्मचारी तुम गुरुवर, मुख मुद्रा अति प्यारी॥ भारत...॥13॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि महाव्रत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी श्रेष्ठ बनाया गुरुवर, महावीर कीर्ति ने।
चारों अनुयोगों को समझा, गुरु ने स्वयं गुरु से॥ भारत...॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि सिद्धान्त रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर ने गणधर पद देकर, धर्म विधि समझाई।
विमल सिंधु से सूरिपद पा, बने आप गुरु राई।।
भारत गौरव कुन्थुसागर, हो वात्सल्य दिवाकर।
भक्ति नृत्य जयकार सहित, हम लाये अर्घ सजाकर।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि नायक रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौशल्या माता के जैसी, संग में विजया माता।
राम सरीखे सन्मतिसागर, ज्येष्ठ तुम्हारे भ्राता।। भारत..।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि बन्धु रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

श्री बाहुबली के दर्शन पा, गुरुवर को अति आनन्द हुआ।
निज शिष्यों को दीक्षा देकर, अतिशायी परमानन्द हुआ।।
वात्सल्य निधि कुन्थुसागर, तुमको शत-शत अभिनन्दन है।
गुरु नाम विधान रचा हम सब, अर्पित करते पद चंदन हैं।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि भक्ति रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु तंत्र मंत्र वा यंत्रों से, हर प्राणी पर उपकार करें।
वे कृपा सिंधु हैं दयानिधि, मंत्रादिक दे उद्धार करें।। वात्सल्य..।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि मंत्र रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु तुमने ग्रंथ अनेक लिखे, वो ग्रंथ बड़े उपकारी हैं।
सब इक से इक बढ़कर उत्तम, भव्यों को भव हितकारी हैं।। वात्सल्य..।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि ग्रन्थ रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु कुन्दकुन्द का मूलसंघ, श्री नंदी संघ कहाता है।
उस नंदी संघ के नायक तुम, मन तुमको शीश झुकाता है।। वात्सल्य..।।20।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि संघ रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु शिष्य आपके अनजाने, वो आर्षमार्ग को ना माने।
ऐसे कट्टर सब शिष्यों को, जिनवाणी खोले समझाने
वात्सल्य निधि कुन्थुसागर, तुमको शत-शत अभिनन्दन है।
गुरु नाम विधान रचा हम सब, अर्पित करते पद चंदन हैं॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि विविध धर्मोपदेशक रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आर्षमार्ग पर अटल रहे, ये शिक्षा दी सब शिष्यों को।
पंचामृत आदि क्या होता, ये सिखलाया सब शिष्यों को॥ वात्सल्य..॥22॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि शिक्षक रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्यमयी गुरु वाणी सुन, सबने सम्यक् पथ स्वीकारा।
इक आर्षमार्ग ही सच्चा है, उन सबने श्रद्धा से धारा॥ वात्सल्य..॥23॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि सम्यक्त्व रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु आप बड़े ही ज्ञानी हो, औ ज्ञानी हैं सब शिष्य तेरे।
हमको ज्ञानामृत दो बाबा, मिट जायें सब संकट मेरे॥ वात्सल्य..॥24॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि अमृतवचन रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

एकान्ती जन से गुरुवर चर्चा करें।
सर्व भक्त गुरुवर तेरी अर्चा करें॥
कुन्थु गुरु की करते हम आराधना।
तप संयम की करते गुरुवर साधना॥25॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि अनेकांत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा दी गुरु कई भव्यों को आपने।
उन सबका उद्धार किया है आपने॥ कुन्थु-गुरु..॥26॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि भगवत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक किये अनेकों आपने।
पंच परावर्तन क्षय हेतु आपने॥ कुन्थु-गुरु..॥27॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि पुण्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र अणिन्दा चमकाया गुरु आपने।
वहाँ बुलाये संत अनेकों आपने।।
कुन्थु गुरु की करते हम आराधना।
तप संयम की करते गुरुवर साधना।।28।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि धर्मप्रभावक रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पदमा माँ को वहाँ बिठाया आपने।
माता के सिर पार्श्व बिठाये आपने।। कुन्थु-गुरु..।।29।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि शीर्ष रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा में रत रहती देवी साथ में।
गुरु की भक्ति करती दिन वा रात में।। कुन्थु-गुरु..।।30।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि दिव्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवरात्रि में सब विधान उत्तम करो।
उत्तम द्रव्यों से सम्यक् पूजा करो।। कुन्थु-गुरु..।।31।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि पूज्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मावती की प्रीत जगाई आपने।
माँ की महिमा सदा बताई आपने।। कुन्थु-गुरु..।।32।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि प्रीति रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज - आठ दरब मय अर्घ बनाय... पंचमेरु पूजा की राग..)

प्रथम महापद मुनि पद जान, गणधर पद गुरु की पहचान।
भजो गुरु पाय, जय गुरु कुन्थु, जय गुरुराय.........।।
अष्ट द्रव्य की थाल चढ़ाय, मन वच तन से शीश झुकाय।
भजो गुरु पाय, जय गुरु कुन्थु, जय गुरुराय...।।33।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि मुनि रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर से गुरु बन आचार्य, करते धर्म भाव के कार्य।
भजो गुरु पाय, जय गुरु कुन्थु, जय गुरुराय.........॥
अष्ट द्रव्य की थाल चढ़ाय, मन वच तन से शीश झुकाय।
भजो गुरु पाय, जय गुरु कुन्थु, जय गुरुराय...॥34॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि गणधर रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल सिंधु से पदवी पाय, वात्सल्य रत्नाकर कहलाय।
भजो गुरुपाय...........अष्ट द्रव्य.............॥35॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि वात्सल्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद केसरी पद पाय, श्रमणरत्न गुरुवर कहलाय।
भजो गुरुपाय...........अष्ट द्रव्य.............॥36॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि श्रमणरत्न रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत सिद्धान्त महोदधि आप, वादीभ सूरी हो गुरु आप।
भजो गुरुपाय...........अष्ट द्रव्य.............॥37॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि वादीभ रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारत गौरव इक पद जान, निमित्त ज्ञान शिरोमणि जान।
भजो गुरुपाय...........अष्ट द्रव्य.............॥38॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि परमदया रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण शिरोमणि गुरुवर आप, करते हम गुरु तेरा जाप।
भजो गुरुपाय...........अष्ट द्रव्य.............॥39॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि जप रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं आपको पद अभिमान, दुःखियों के तुम हो भगवान।
भजो गुरुपाय...........अष्ट द्रव्य.............॥40॥

ॐ ह्रीं श्री सूरि कल्याण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नगर डगर और गाँव में, गुरु ने किया विहार।
आर्ष मार्ग पे दृढ़ रहो, दिया यही संस्कार।।
बाल वृद्ध नर नारियाँ, आते गुरु के द्वार।
पूजा कर गुरु आपकी, पाते हर्ष अपार।।41।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि जगतगुरु रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुगिरी जब से गुरु, आये संघ के साथ।
देवी माँ ने स्वप्न दे, दिया आपका साथ।। बाल... ।।42।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि अतिशय रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ नया निर्माण कर, किया स्वप्न साकार।
स्वर्गों सा सुन्दर लगे, तीर्थ बड़ा मनहार।। बाल... ।।43।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि तीर्थ निर्माण रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुगिरी के तीर्थ में, मंदिर बने विशाल।
सम्मेदाचल आदि के, दर्शन मिलें त्रिकाल।। बाल... ।।44।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि कुन्थुगिरी तीर्थ रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारत भर के भक्तगण, आते गुरु तव द्वार।
दुःखहर्त्ता गुरु आप हो, हो गुरु तारणहार।। बाल... ।।45।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि तारणहार रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम बार ही दर्श में, सब कुछ तुमसे पाय।
जिस जिसकी जो कामना, शीघ्र पूर्ण हो जाय।। बाल... ।।46।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि वरदहस्त रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भक्तों पर आपका, है वात्सल्य अपार।
बेटा कहकर बोलते, मिलती शांति अपार।। बाल... ।।47।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि प्रशांत रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ व भक्ति से, गूँजे गुरु का द्वार।
सब त्यौंहारों पर यहाँ, रहती भीड़ अपार।।
बाल वृद्ध नर नारियाँ, आते गुरु के द्वार।
पूजा कर गुरु आपकी, पाते हर्ष अपार।।48।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि पर्व रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर के इस तीर्थ पे, होता नित अभिषेक।
हम भी तुम अर्चा करें, चरणों में सिर टेक।। बाल... ।।49।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि स्तुति रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि पाठक साधु के, गुण पालें गुरुराज।
निज आतम सिद्धी करें, बालयति ऋषिराज।। बाल... ।।50।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि बालयति रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात-पिता का प्रेम भी, देते गुरुवर आप।
आप दयालु हो गुरु, हरते सबके पाप।। बाल... ।।51।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि प्रेम रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण साधना कर रहे, गुरुवर तेरे पास।
साधु समाधि भाव की, करते मन में आश।। बाल... ।।52।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि साधु रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा शिक्षा ले रहे, करने मुनि कल्याण।
महामंत्र सुन आप से, छोड़े अपने प्राण।। बाल... ।।53।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि समाधि रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई दीक्षा दी आपने, हुई समाधि अनेक।
हमको भी तारो गुरु, यही भावना एक।। बाल... ।।54।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि तारक रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव क्या तिर्यंच भी, आप शरण में आय।
पाकर तुम वात्सल्य वो, जीवन धन्य बनाय।। बाल... ।।55।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि करुणा रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस गुण धारी गुरु, समता के भंडार।
हे कुन्थुसागर गुरु !, तुम्हें नमन शत बार।।
बाल वृद्ध नर नारियाँ, आते गुरु के द्वार।
पूजा कर गुरु आपकी, पाते हर्ष अपार।।56।।

ॐ ह्रीं श्री सूरि छत्तीस गुणधारी परमेष्ठी रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय गुरुवर कुन्थुसागर, जय हो सदा तुम्हारी।
दूर-दूर से गुरु दर्शन को, आये सब नर-नारी।।
दुल्हन जैसी सज गई देखो, कुन्थुगिरी ये प्यारी।
गुरु को हम पूर्णार्घ चढ़ाकर, जायें नित बलिहारी।।

ॐ ह्रीं प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कुन्थुगिरी की वापिका, जल से है परिपूर्ण।
उसका जल गुरु पद चढ़ा, पायें सुख सम्पूर्ण।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा

कुन्थुगिरी के बाग से, लाये सुन्दर फूल।
पुष्पाञ्जलि गुरु को चढ़ा, पायें गुरु पद धूल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ हूँ कुन्थुसागर सूरिभ्यो नमः।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- हे गुरुवर तव नाम से, कुन्थुनाथ भगवान।
हम तेरे गणधर बने, आप बनो भगवान॥
जयमाला हम गा रहे, द्रव्यों की ले थाल।
सर पर श्रीफल ले चले, मिले मोक्ष की माल॥

शेर छंद

(तर्ज – पंखीड़ा तू उड़ के...)

आचार्य कुन्थु सिंधु का जयकार कीजिये।
गुरुदेव के चरणों में नमस्कार कीजिये॥
मेवाड़ ग्राम बाठेड़ा के सूरि हो महान।
गणधर का पद विशेष बना आपकी पहचान॥1॥

दीक्षित हुये थे आपके संग तीन मुनिराज।
श्री कुन्थु सिन्धु नमि संभव आदि श्रमण राज॥
कितने पवित्र श्रेष्ठ नाम आपके गुरु।
गुरु आप सबके नाम हैं जिनदेव से शुरू॥2॥

वात्सल्य आपका हमें भरपूर मिल रहा।
गुरु आपके आशीष का अमृत बरस रहा॥
बहु भक्त आपके दरश को नित्य ही आयें।
पाकर गुरु आशीष वो थकान मिटायें॥3॥

होते प्रसन्न हम सभी आके गुरु के पास।
हम कामना यही करे रहे तुम्हारे पास॥
मुस्कान देख आपकी हम धन्य हो गये।
संसार के तनाव से हम मुक्त हो गये॥4॥

हमको मिले गुरु चरण में शांति नित अपार।
आनंद रस का धाम है गुरु आपका दरबार॥
आते हैं भक्त दूर से घर बार छोड़के।
दुःख-दर्द सुनाते वो अपनी शर्म छोड़के॥5॥

हो जायेगा सब काम बेटा कहें यही आप।
सबके मसीहा भाई-बंधु मात-पितु आप॥
आशीष जिसको आपका इक बार मिल गया।
सोया सितारा भाग्य का उसका चमक गया॥6॥

धन धान्य श्रेष्ठ ख्याति गुरु भक्ति से मिले।
संसार से मुक्ति भी गुरु भक्ति से मिले॥
गुप्ति समिति धारी गुरु सरल स्वभावी।
'आस्था' धरे हम भी बने गुरु मधुर स्वभावी॥7॥

ॐ ह्रीं प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- छत्तीस गुणधारी गुरु, कुन्थु सूरि है नाम।
'आस्था' से हम पूजते, पाने शिवपुर धाम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रशस्ति

(नरेन्द्र छंद)

तीन काल की चौबीसी को, नित प्रति हम सब ध्यायें।
आदिनाथ से महावीर को, अपना शीश झुकायें॥
गणधर प्रभु श्री मात शारदा, प्रज्ञा दीप जलाये।
पंच परम परमेष्ठी जिनकी, पूजन कर हर्षाये॥1॥

श्री आचार्य महावीर कीर्ति, गुरु के गुरु कहाते।
श्री कुन्थुसागर सूरिवर की, यश गाथा हम गाते॥
नंदी संघ के गणनायक हो, गणधर पद के धारी।
सर्वाधिक आचार्य बनाये, जय हो गुरु तुम्हारी॥2॥

हे वात्सल्य निधि गुरुदेवा, तुम आगम के ज्ञानी।
पद्मावती माँ संघ तुम्हारे, मुख में है जिनवाणी॥
श्रेष्ठ चलाचल तीर्थ अनेकों, तुमने गुरु बनाये।
कुन्थुगिरी में बैठ निरन्तर, धर्म ध्वजा फहराये॥3॥

मन मोहक छवि लगे आपकी, सबको आप लुभाते।
चेहरे पे मुस्कान रहे नित, हँसते और हँसाते॥
अंजनगिरी में कुन्थु महार्चा, लिखना शुरू किया था।
फिर औरंगाबाद नगर में, आकर पूर्ण किया था॥4॥

छन्द शास्त्र का ज्ञान नहीं पर, फिर भी गुरु गुण गाया।
गुप्ति गुरु ने सम्पादन कर, इसको सरस बनाया॥
मम हर रचना के सम्पादक, उनको नमन करूँ मैं।
कुन्थु कनक-गुप्ति गुरु को भज, शिवपुर गमन करूँ मैं॥5॥

दोहा- गुरु भक्ति के वश लिखा, गुरु का कुन्थु विधान।
भूल-चूक कर दें क्षमा, ज्ञानी जन विद्वान।।
'आस्था' भक्ति भाव से, कर लो भव्य विधान।
गुरुवर का आशीष पा, सफल करो सब काम।।

॥ इति अलम् ॥

ग.ग. कुन्थुसागर जी गुरुदेव की आरती

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

(तर्ज- इंजन की सीटी.....)

ऋषिवर की आरती में म्हारो मन डोले-2
सगला चालोरे हो SSS सगला चालोरे गुरु की शरणा होले होले...

बाठेड़ा में जन्म लिया है सोहन माँ उर आये।
रेवाचंदजी पिता तुम्हारे शास्त्राभ्यास कराये।। सगला चालो रे...

महावीर कीर्ति गुरुवरजी तुम को राह दिखायें।
अध्यातम के ज्ञाता गुरुवर आतम रोग भगायें।। सगला चालो रे...

इन गुरुवर से दीक्षा लेकर कुन्थु ऋषि कहलाये।
जन-जन को वात्सल्य हृदय से आगम राह दिखाये।। सगला चालो रे...

शताधिक दीक्षा के दाता गुरु रत्न कहलाये।
सर्वाधिक मुनि दीक्षा दाता कुन्थु ऋषि कहलाये।। सगला चालो रे...

जन्म जयंती सभी मनाओ गाओ मंगल गान।
युगों-युगों तक गुरु महिमा का करते रहो बखान।। सगला चालो रे...

ऋद्धि-सिद्धि आदि विद्या से जिन महिमा दर्शाई।
'गुप्ति' भी गुरु भक्ति करके बन जावे शिवराई।। सगला चालो रे...

ग.ग. कुन्थुसागर जी गुरुदेव की आरती

(तर्ज – मेरे सर पे रख दो बाबा....)

हम आरती करने आये, लेकर दीपों की थाल।
कुन्थु गुरु की आरती, करते बाल गोपाल॥ हम...

1. रेवाचंद के राजदुलारे, सोहन माँ के हो प्यारे।
बाठेड़ा में जन्मे गुरुवर, जन-जन के तारणहारे॥
तव मात-पिता यूँ बोले-2, हीरा है मेरा लाल।
कुन्थु गुरु की आरती....

2. सूरि श्री महावीर कीर्ति से, मुनि दीक्षा के व्रत पाये।
विमल सिंधु आचार्य बनाकर, मन ही मन अति हर्षाये॥
जग बंधु गुरुवर तेरा-2, है नंदी संघ विशाल।
कुन्थु गुरु की आरती....

3. हो वात्सल्य दिवाकर गुरु तुम, सब पे प्रेम लुटाते हो।
बेटा कहके हे गुरुवर तुम, सबके कष्ट मिटाते हो॥
'आस्था' से तव गुण गाये-2, हो जाये मालामाल।
कुन्थु गुरु की आरती....

***

प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर चालीसा

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

दोहा- चौबीसों जिन को नमूँ, नमूँ शारदा मात।
सब गणधर जिनदेव को, जोड़ूँ दोनों हाथ॥
नंदी संघ के नाथ हैं, कुन्थु-सिन्धु-आचार्य।
उनका चालीसा पढ़ूँ, सिद्ध होय सब कार्य॥

(चौपाई)

जय कुन्थुसागर गुरुराया, गणाधिपति गणधर गुरुराया।
रेवाचन्द के राजदुलारे, सोहन माता के सुत प्यारे॥1॥
बाठेड़ा में जन्म कहाया, तीर्थ अणिन्दा निकट बताया।
माता तुमको कहे कन्हैया, दो बहिनें इक छोटा भैया॥2॥
पिता आपके पंडित ज्ञानी, तुम्हें पढ़ायें नित जिनवाणी।
उनसे ही सब शिक्षा पाई, विद्यालय नहीं गये कन्हाई॥3॥
चले अहमदाबाद कन्हैया, रोज कमाये बहुत रूपैया।
वहाँ श्रमण सीमंधर आये, संग सुबाहू मुनिवर आये॥4॥
उनसे ब्रह्मचर्य व्रत पाया, श्रवणबेलगोला संघ आया।
श्री आचार्य महावीर कीर्ति, सब दुनिया में जिनकी कीर्ति॥5॥
महातपस्वी आगम ज्ञाता, मंत्र अठारह भाषा ज्ञाता।
जाने पशु-पक्षी की वाणी, भक्त अनेकों राजा-रानी॥6॥
वे गुरु तुम मुनि दीक्षा दाता, तुम्हें सिद्ध पद्मावती माता।
कुन्थु सिन्धु अब नाम कहाया, हुमचा दीक्षा क्षेत्र कहाया॥7॥
सूरि विमलसागर गुरुराया, जिनमें अति वात्सल्य समाया।
वे अग्रज तुम अनुज कहाये, वे तुमको आचार्य बनायें॥8॥
तुमने नंदी संघ बनाया, भारत भर में भ्रमण रचाया।
महाग्रन्थ तुमने रच डाले, सब उपयोगी श्रेष्ठ निराले॥9॥
आर्ष मार्ग का ध्वज फहराया, रानीला तीरथ प्रगटाया।
तीर्थ अणिन्दा को चमकाया, कुन्थुगिरी नव तीर्थ बनाया॥10॥

तुमने चलते तीर्थ बनाये, श्रमण शताधिक वा आर्यायें।
सर्वाधिक आचार्य बनाये, वे सब धर्म ध्वजा फहराये॥11॥
ऐलक क्षुल्लक भी बहुतेरे, बने आप चरणों के चेरे।
आप समाधि श्रेष्ठ कराते, आधि व्याधियाँ सर्व मिटाते॥12॥
तुम भक्तों के भोले बाबा, चिंता हरने वाले बाबा।
जो भी तेरे दर पर आते, तुम उन सबके कष्ट मिटाते॥13॥
रहे सदा भक्तों का मेला, क्योंकि तुममें नहीं झमेला।
जो श्रद्धा से तुम दर आते, खाली हाथ कभी ना जाते॥14॥
पुत्रहीन सुन्दर सुत पाते, निर्धन धन वैभव सुख पाते।
रोगी रोग मुक्त हो जाते, ज्ञान हीन श्रुत विद्या पाते॥15॥
कन्या हीन सुकन्या पाते, वंशहीन का वंश बढ़ाते।
तुमने रोजगार दिलवाया, लाखों का व्यापार बढ़ाया॥16॥
व्यसनी व्यसन मुक्त हो जाते, दुर्जन भी सज्जन बन जाते।
गिरते को गुरु आप उठाते, भटकों को सन्मार्ग दिखाते॥17॥
मिथ्यात्वी समकित को पाते, रागी वैरागी बन जाते।
जिस पर गुरु कृपा हो जाये, वो दुनियाँ में मौज उड़ाये॥18॥
गुरु का भक्त परम सुख पाये, धन यश वैभव बढ़ता जाये।
पूरी होती सबकी इच्छा, पुण्यवान की होती दीक्षा॥19॥
मैं श्रद्धा से तुमको ध्याऊँ, तीन भक्ति कर शीश झुकाऊँ।
हे गुरु ! मुझको आप उबारो, 'गुप्तिनंदी' को भव से तारो॥20॥

दोहा- कुन्थु सिन्धु गुरुदेव की, भक्ति करू दिन-रात।
चालीसा उनका पढ़ूँ, दीप धूप के साथ॥
उपकारी गुरुदेव को, जो भी नित उठ ध्याय।
वो पाये संसार सुख, अंत मोक्ष में जाय॥

जाप्य मंत्र : ॐ हूँ श्री कुन्थु सूरिभ्यो नमः।

ग.ग. श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव अपने दीक्षा गुरु एवं गुरु भाइयों के साथ

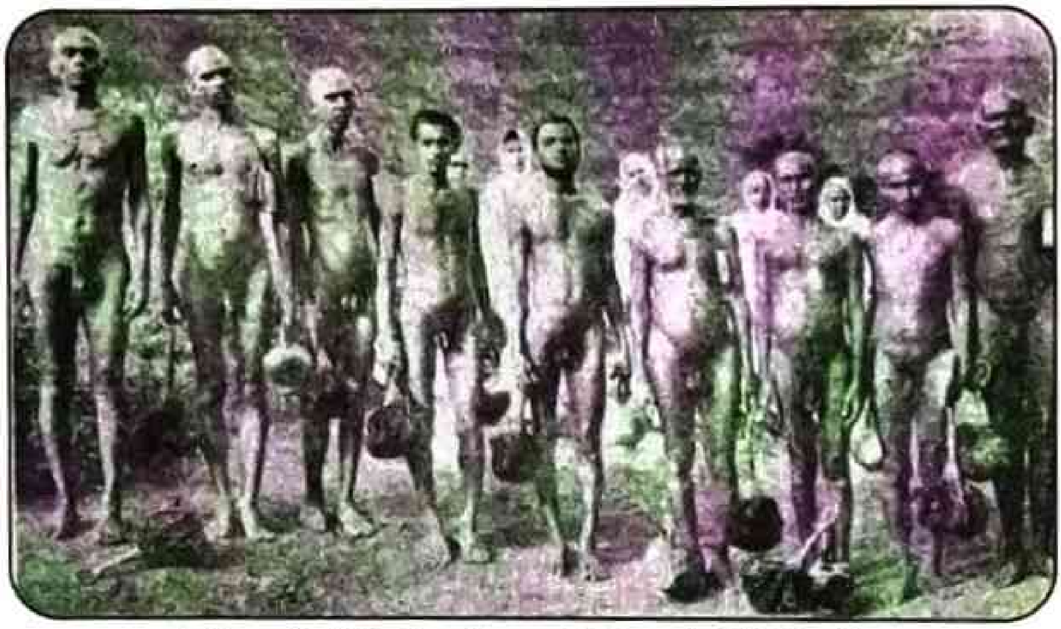

आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी गुरुदेव का मुनिसंघ - मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र-1970

बायें से दायें - आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी गुरुदेव, आ. श्री सन्मतिसागर जी, आ. श्री नेमीसागर जी
आ. श्री कुन्थुसागर जी, आ. श्री सम्भवसागर जी, आ. श्री अरहसागर जी
श्री वासपूज्यसागर जी, श्री नमीसागर जी एवं श्री आदिसागर जी

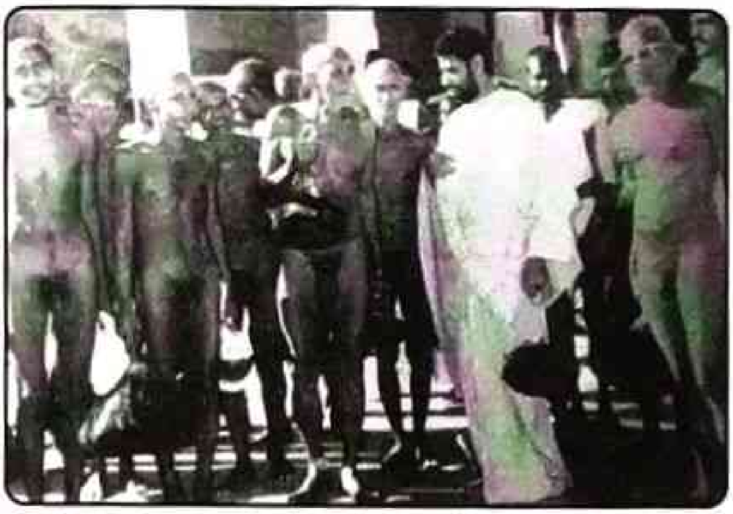

ग.ग. श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ

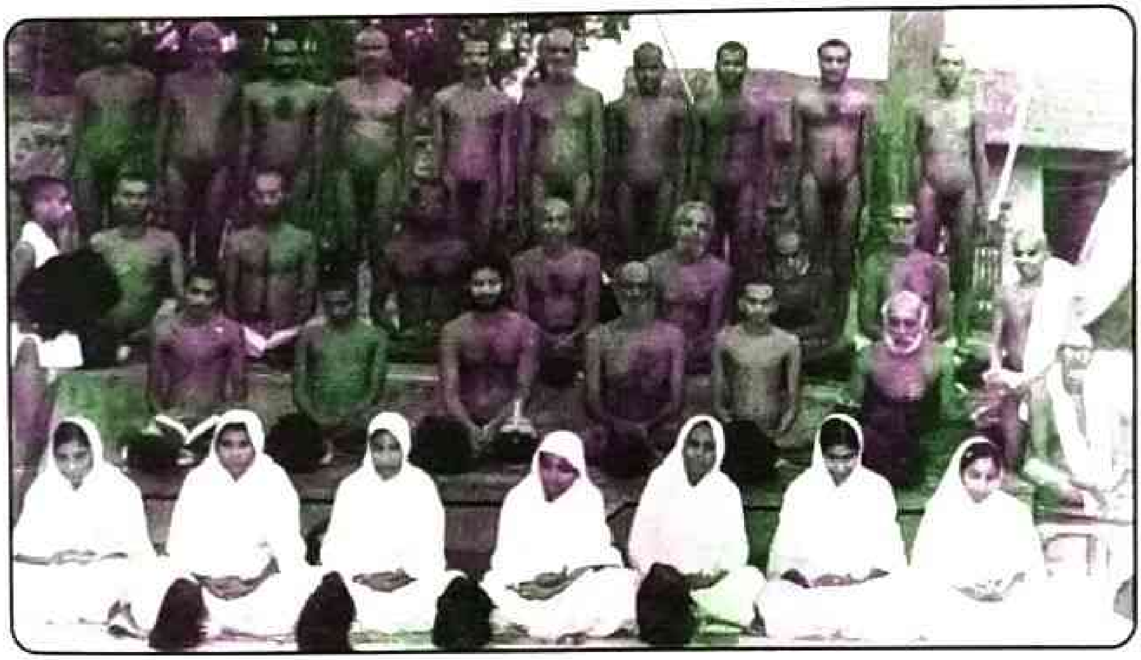

ग.ग. श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ

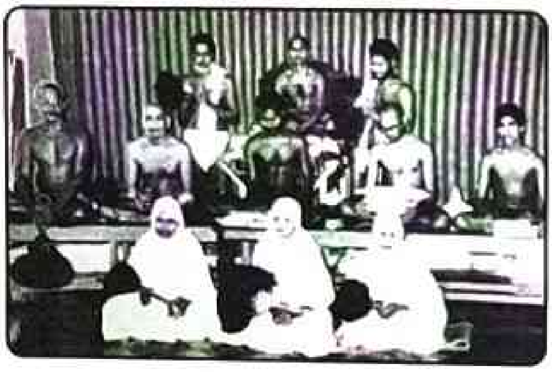

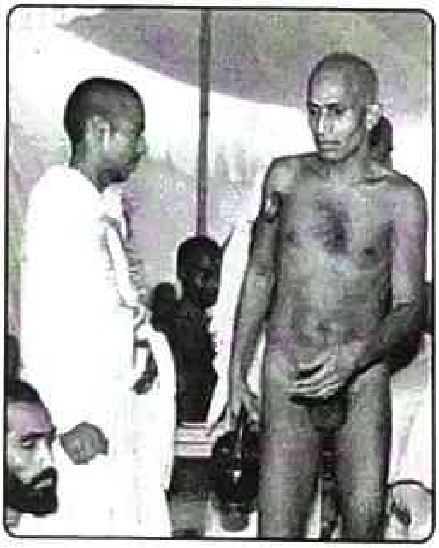

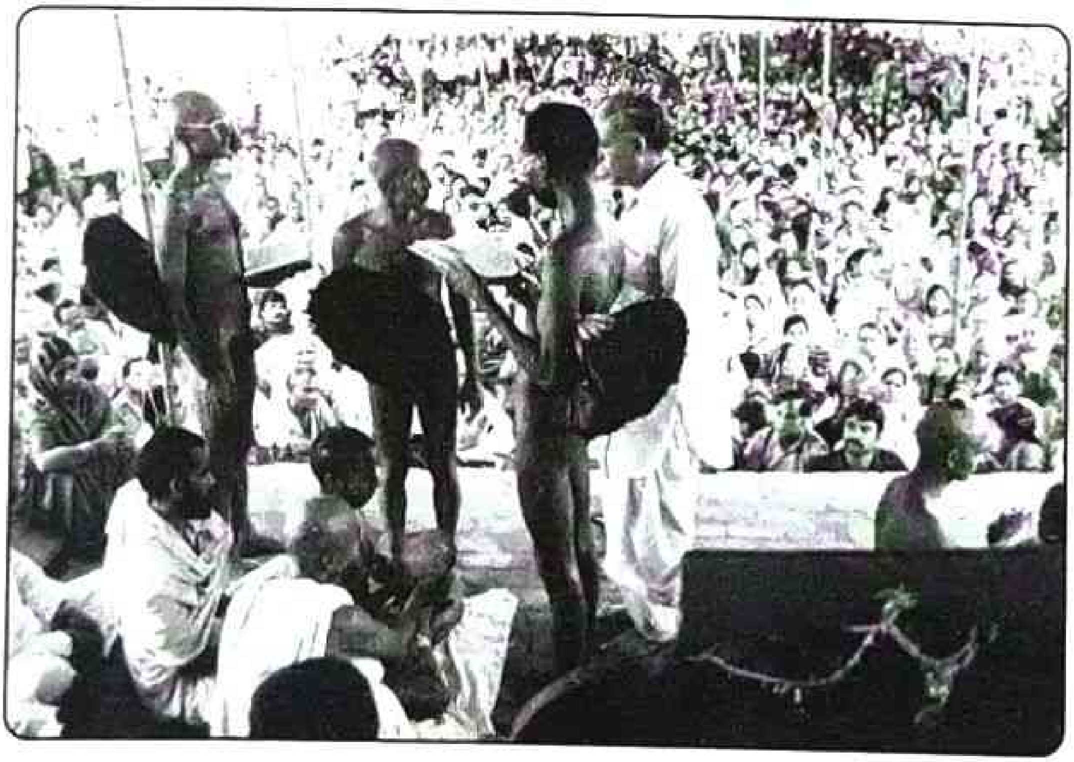

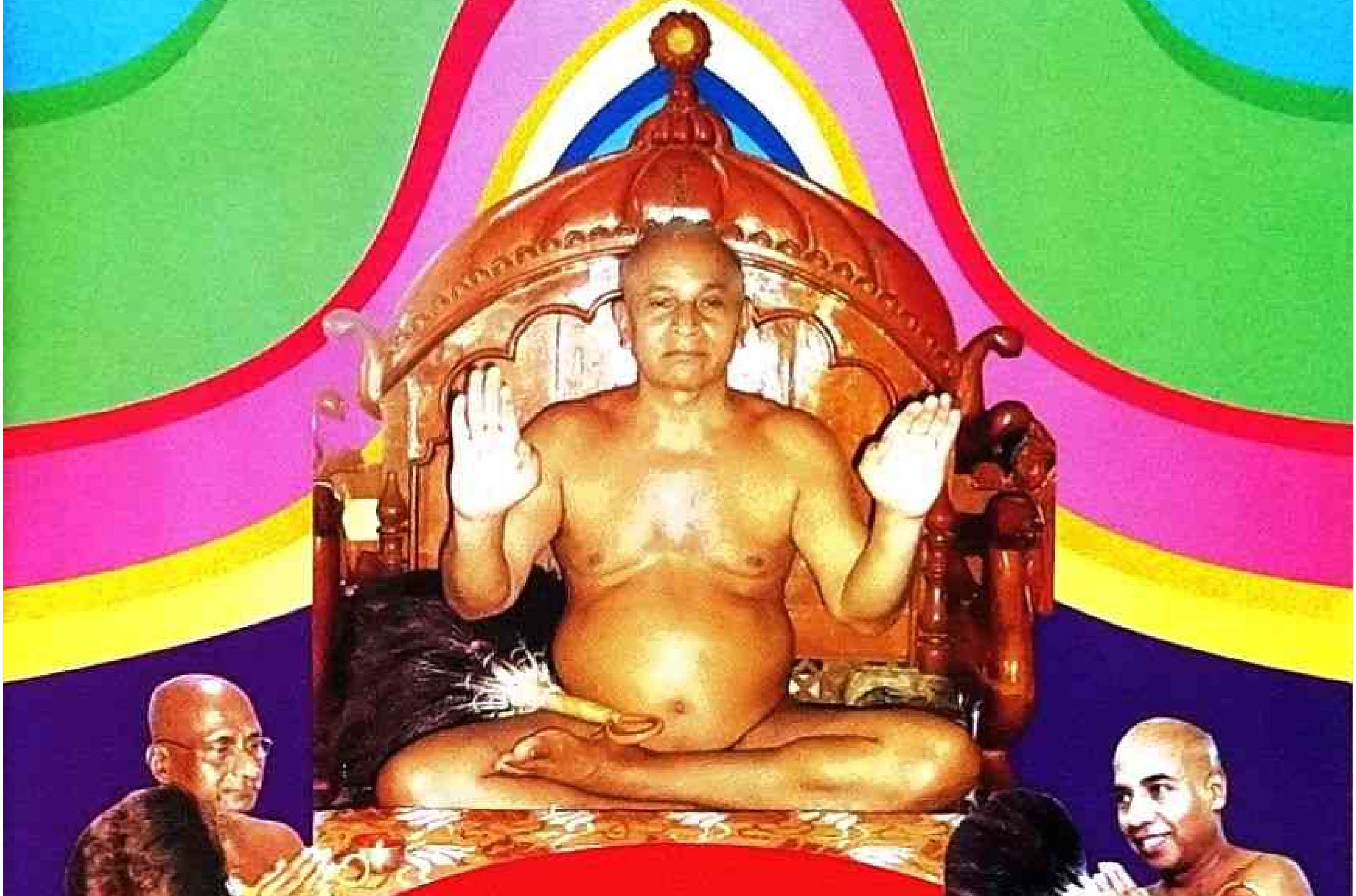

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
को नमन करते हुए
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव
एवं
प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी गुरुदेव

अर्थ सौजन्य

श्रीमान् सेठ श्री ताराचंद जी, संतोष कुमार जी
सचिन कुमार जी पाटणी परिवार, बालाजी नगर, औरंगाबाद (महा.)

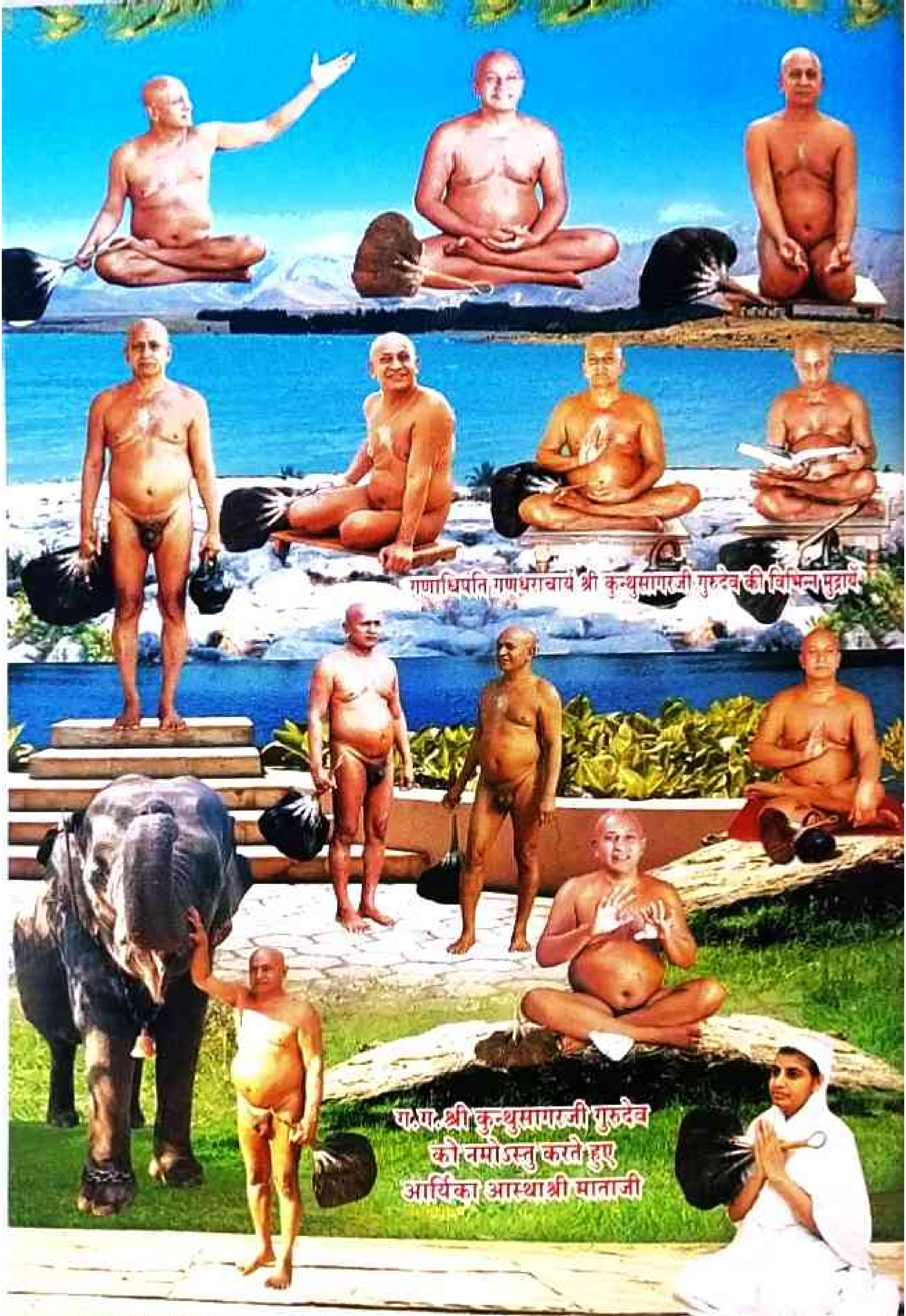

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट-जयपुर मो. 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com